आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-29, अंक-1 जनवरी 2015

इस अंक में

- भारत के 66वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय में राष्ट्र ध्वज का ध्वजारोहण 1
- मधुमेह : संकेत और लक्षण 2
- 'कांगड़ा आविष्कार एक्स्पो–2014' में आई सी एम आर की भागीदारी 3
- भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 102वें सत्र के दौरान 'प्राइड ऑफ इंडिया मेगा साइंस एक्स्पो' में आई सी एम आर की भागीदारी 5
- प्रवासी भारतीय दिवस एवं वाइब्रैंट गुजरात के अंतर्गत मेगा साइंस एक्स्पो में आई सी एम आर की भागीदारी 6
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 7

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

भारत के 66वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) मुख्यालय में डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर द्वारा राष्ट्र ध्वज का ध्वजारोहण

भारत के 66वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) मुख्यालय में स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने राष्ट्र ध्वज का ध्वजारोहण किया और उपस्थित सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों के साथ–साथ डी एच आर और आईसीएमआर परिवार के सभी सदस्यों को बधाई दी। अपने संदेश में डॉ कटोच महोदय ने आईसीएमआर के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे सभी कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपने–अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करें। सभी वैज्ञानिकों को अपने कार्यों में प्राथमिकता का निर्धारण करने, शोध से विकसित नई प्रौद्योगिकियों को जनसामान्य तक पहुंचाने की दिशा में पूर्ण निष्ठा से कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कार्यालय में सभी प्रशासनिक कार्यों का डिजिटलीकरण करने के कार्य को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण करने का भी आह्वान किया। इस अवसर पर मुख्यालय के वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी. एस. जवाहर; परिसर में स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के निदेशक डॉ अरविंद पाण्डेय के साथ–साथ बड़ी संख्या में वरिष्ठ वैज्ञानिकगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण भी उपस्थित हुए।

मधुमेह : संकेत और लक्षण

मधुमेह चयापचय से संबंधित एवं सभी भौगोलिक क्षेत्रों के लोगों को प्रभावित करने वाला एक गंभीर रोग है जिसकी व्यापकता पूरे विश्व में बढ़ती जा रही है। विश्व के निम्न और मध्यम आय वर्ग के देशों में इस महंगे रोग का बहुत अधिक भार पड़ता है जहां आधुनिकीकरण एवं शहरीकरण के चलते लोगों के रहन-सहन में व्यापक प्रतिकूल बदलाव देखने को मिलता है।

वर्ष 2013 में विश्व में अनुमानतः 382 मिलियन लोग मधुमेह ग्रस्त थे जिनमें 80 प्रतिशत से अधिक लोग निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के देशों के थे। एक आकलन के अनुसार वर्ष 2013 में भारत में 6.51 करोड़ वयस्क मधुमेह की चपेट में थे तथा सर्वाधिक संख्या में मधुमेह ग्रस्त लोगों वाले शीर्ष 10 देशों में भारत का द्वितीय स्थान था। यदि मधुमेह के नए रोगियों को रोकने के लिए कदम नहीं उठाए गए तो अनुमानतः वर्ष 2035 तक मधुमेह ग्रस्त रोगियों की संख्या बढ़कर लगभग 17 करोड़ हो जाएगी। मधुमेह को शुरुआती अवस्था में रोकना संभव है तथा विभिन्न नृजातीय समुदायों में जीवन-शैली में बदलाव जैसी नीतियां प्रभावी पाई गई हैं। हालांकि, आबादी स्तर पर उन नीतियों को लागू करने के लिए सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य तथा व्यावहारिक कार्यक्रमों को तैयार करने की आवश्यकता है जिनकी विकसित एवं विकासशील देशों में अधिकांशतः कमी है। प्रारंभिक अवस्था में निदान हो जाने और उपयुक्त चिकित्सीय उपायों के अपनाने से रक्त में ग्लूकोज़ का वांछित स्तर बना रहता है और वाहिका संबंधी जटिलताएं भी नहीं होतीं।

मधुमेह में सभी मामलों में लगभग 85-95 प्रतिशत मामले टाइप-2 मधुमेह के होते हैं जिनमें लक्षण नहीं उभरने के कारण बहुधा वे कई वर्षों तक निदान रहित पड़े रहते हैं। इसके परिणामस्वरूप, कई रोगियों में निदान के समय वाहिकीय जटिलताएं पहले से ही पाई जाती हैं। पश्चिमी देशों की आबादी की तुलना में एशियाई आबादियों विशेषतया भारतीय मूल के एशियाई लोगों में कम आयु में ही मधुमेह के विकसित होने का खतरा काफी अधिक होता है। इसलिए, प्रारंभिक अवस्था में मधुमेह की पहचान करने के प्रयास करने आवश्यक हैं जिससे रोगियों की लम्बी अवधि के कष्ट को तथा इसके कारण समाज पर पड़ने वाले भार को कम किया जा सके।

मधुमेह के लिए खतरे वाले कारक

कई अध्ययनों में देखा गया है कि सामान्य आबादी में विशेषतया ग्रामीण क्षेत्रों में मधुमेह और इससे उत्पन्न जटिलताओं के बारे में बहुत कम जागरूकता है। आबादी में मधुमेह तथा इससे जुड़ी गंभीर जटिलताओं के विषय में जागरूकता उत्पन्न करने की तत्काल आवश्यकता है। भारत में एकत्रित जानपदिक रोगविज्ञानी आंकड़ों से इसके लिए जिम्मेदार कई खतरे वाले कारकों की उपस्थिति का पता चलता है जिनकी आसानी से पहचान की जा सकती है। प्रमुख खतरे वाले कारकों का वर्णन आगामी बॉक्स में प्रस्तुत है।

भारतीयों में टाइप -2 मधुमेह के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक

- परिवार में मधुमेह की उपस्थिति का इतिहास
- आयु - 35 वर्ष से अधिक
- अतिभार (बॉडी मास इंडेक्स ≥ 23 कि.ग्रा./मी^{2}) तथा स्थूलता (बॉडी मास इंडेक्स ≥ 25 कि.ग्रा./मी^{2})
- चौड़ी कमर अथवा शरीर के ऊपरी भाग में मोटापा (पुरुषों के लिए > 90 से.मी. और महिलाओं के लिए > 80 से.मी)
- अतिरक्तदाब अर्थात् हाइपरटेंशन की उपस्थिति
- हाल के दौरान शरीर भार का बढ़ना
- निष्क्रिय जीवन शैली
- सगर्भता के दौरान मधुमेह की उपस्थिति

मधुमेह के संकेत और लक्षण

चूंकि, मधुमेह के उभरने की प्रक्रिया दीर्घकालिक होती है इसलिए कई लोग इसके संकेतों और लक्षणों से अनभिज्ञ बने रहते हैं। लोग इसे एक गंभीर समस्या नहीं मानते हैं क्योंकि अन्य रोगों के विपरीत रक्तशर्करा के स्तर में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप तत्काल लक्षण नहीं उभरते। लोगों को जानकारी नहीं होती कि इसके लक्षणों के उभरने से कई वर्ष पहले ही क्षति की शुरुआत हो सकती है। यह खेदजनक है, क्योंकि यदि शुरुआती अवस्था में लक्षणों की पहचान हो जाए तो रोग पर तत्काल नियंत्रण रखने और वाहिका संबंधी जटिलताओं को रोकने में मदद मिल सकती है।

मधुमेह के चेतावनी संकेत और पुरातन लक्षण

चूंकि, शुरुआती अवस्थाओं में टाइप-2 मधुमेह के लक्षणों की अभिव्यक्ति नहीं होती इसलिए इसके चेतावनी संकेतों के विषय में लोगों को शिक्षित करना अति आवश्यक है।

टाइप 1 मधुमेह में आम तौर पर बहुमूत्रता अर्थात पॉलीयूरिया, अधिक प्यास और भूख लगने जैसे लक्षण पाए जाते हैं जो तेजी से अतिग्लूकोज़रक्तता की स्थिति में विकसित हो जाता है और अंततः अत्यन्त उच्च स्तर के अतिग्लूकोज़रक्तता स्थिति के साथ टाइप 2 मधुमेह की स्थिति विकसित हो जाती है। केवल टाइप 1 मधुमेह की स्थिति में अथवा लम्बी अवधि तक टाइप 2 मधुमेह की पहचान नहीं होने की स्थिति में शरीर भार में गंभीर गिरावट आ जाती है। अज्ञात कारणों से शरीर भार में कमी होने, थकान एवं बेचैनी होने तथा शरीर में पीड़ा जैसे लक्षण भी सामान्य तौर पर दिखाई देते हैं जो लगभग बहुत मन्द होते हैं अथवा धीरे-धीरे विकसित होते हैं वे भी पहचान में नहीं आते हैं।

मधुमेह के लिए जांच परीक्षण

पैंतीस वर्ष अथवा इससे अधिक आयु के किसी एशियाई मूल के व्यक्ति में यदि उपर्युक्त संभावित खतरों में कोई दो अथवा अधिक संभावित खतरे पाए जाएं तो उसे मधुमेह की जांच करानी चाहिए। सामान्य तौर पर जांच परीक्षण के रूप में ओरल ग्लूकोज़ टॉलरैंस टेस्ट (ओ जी टी टी) का प्रयोग किया जाता है। फास्टिंग और ग्लूकोज सेवन के 2 घंटे पश्चात किए गए परीक्षणों के आधार पर फास्टिंग की स्थिति में दोषपूर्ण ग्लूकोज़ के स्तरों की पहचान की जा सकती है। (फास्टिंग ग्लूकोज़ ≥ 110-<125 mg/dl, इंपेयर्ड (क्षीण) ग्लूकोज़ टॉलरैंस (IGT) 2h ग्लूकोज़ ≥140 - < 200 mg/dl और मधुमेह की उपस्थिति (फास्टिंग ≥ 126 और 2h ग्लूकोज़ ≥ 200 mg/dl)। यदि रैण्डम रक्त ग्लूकोज़ का स्तर ≥ 150 mg/dl है तो OGTT विधि से पुनः पुष्टि करना उपयुक्त होता है। हाल ही में मधुमेह के निदान हेतु परीक्षण के रूप में ग्लाइकोसाइलेटेड हीमोग्लोबिन ($Hb A_1c$) की सिफारिश की गई है (≥6.5%)। $Hb A_1c$ के मान 5.7-6.4 प्रतिशत के बीच पाए जाने की स्थिति में मधुमेह पूर्व अवस्था का संकेत मिलता है। उपर्युक्त संभावित खतरों सहित महिलाओं में प्रसवपूर्व प्रथम परीक्षण के दौरान मानक नैदानिक विधि के मानदण्डों के अनुरूप टाइप 2 मधुमेह के लिए जांच की सिफारिश की जाती है। सगर्भता के 24-28 सप्ताह की अवधि में उन महिलाओं में सगर्भता संबंधी मधुमेह की जांच की सिफारिश की जाती है जिनमें पहले मधुमेह का इतिहास नहीं रहा हो। क्योंकि सगर्भता संबंधी मधुमेह अलाक्षणिक बना रहता है। सगर्भता के दौरान मधुमेह का इतिहास होने की स्थिति में मधुमेह विकसित होने का अत्यधिक खतरा होता है।

मधुमेह पूर्व अवस्था की पहचान का महत्व

इंपेयर्ड फास्टिंग ग्लूकोज़ और इंपेयर्ड ग्लूकोज़ टॉलरैंट जैसी मधुमेह पूर्व स्थितियों में हृद्वाहिकीय रोगों जैसी वाहिकीय जटिलताओं का उच्च खतरा रहता है। अंतर्राष्ट्रीय मधुमेह फेडरेशन (IDF) द्वारा संपन्न ताजा अनुमानों से संकेत मिलता है कि विश्व में 316 मिलियन (6.9%) लोग इंपेयर्ड ग्लूकोज़ टॉलरैंट अवस्था में हैं। उनमें 70 प्रतिशत से अधिक लोग निम्न और मध्यम आय वर्ग के देशों में रहते हैं। यह ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है कि इस समय इंपेयर्ड ग्लूकोज़ टॉलरैंट सहित एक तिहाई लोग 20-39 वर्षीय प्रजनन आयु वर्ग के हैं, इसलिए, वे मधुमेह और अथवा मधुमेह की जटिलताओं के विकसित होने के उच्च संभावित खतरे के साथ कई वर्ष व्यतीत करते हैं। मधुमेह पूर्व अवस्था सहित कुछ लोग भोजन ग्रहण के 2-3 घंटे बाद अल्पग्लूकोज़रक्तता (हाइपोग्लाइसीमिया) का अनुभव करते हैं। यह दोषपूर्ण इंसुलिन चयापचय का एक लक्षण होता है जो मधुमेह की भावी उपस्थिति का संकेत होता है। इसलिए, मधुमेह के ऐसे लक्षणों और संभावित खतरे वाले कारकों की उपस्थिति वाले लोगों की समय-समय पर स्वास्थ्य जांच (मेडिकल चेक-अप) से पहचानरहित मधुमेह से जुड़े खतरे कम हो जाएंगे। इससे बड़ी संख्या में लोगों का स्वास्थ्य स्तर बेहतर होने में मदद मिलेगी वरना वे लोग मधुमेह से जुड़ी चयापचयज असामान्यताओं से लक्षणरहित पीड़ित रहेंगे।

निष्कर्ष

मधुमेह के संकेतों और लक्षणों विशेषतया संभावित खतरों और चेतावनी संकेतों की उपस्थिति में समय-समय पर परीक्षण कराने के विषय में जागरूकता उत्पन्न करने के परिणामस्वरूप मधुमेह पूर्व अवस्था में उपयुक्त उपचार किया जा सकता है जिससे मधुमेह के नए रोगियों को रोकने में काफी मदद मिलेगी। यह प्रमाणित है कि शारीरिक सक्रियता को बढ़ाकर और आहार संबंधी आदतों को बेहतर बनाकर मधुमेह पूर्व अवस्था सहित व्यक्तियों को मधुमेह की चपेट में आने से रोका जा सकता है। इन उपायों को अपनाने से काफी हद तक मधुमेह से जुड़ी जटिलताओं को भी रोका जा सकता है। मधुमेह के चिकित्सा प्रबंध में रोगी को सशक्त बनाना महत्वपूर्ण होता है। इसे मधुमेह के चिकित्सीय एवं निवारक पहलुओं पर सूचना के आदान-प्रदान और रोगियों को शिक्षित करके किया जा सकता है।

यह लेख आई सी एम आर द्वारा प्रकाशित मासिक *"इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च"* के नवम्बर , 2014 अंक में प्रकाशित सम्पाद्कीय पर आधारित है।

कांगड़ा में आयोजित 'कांगड़ा आविष्कार एक्स्पो-2014' में आई सी एम आर की भागीदारी (दिनांक 14-16 दिसम्बर, 2014)

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने स्वयंसेवी संस्था सान्सा फाडण्डेशन की ओर से कांगड़ा के उत्सव पैलेस में आयोजित 3 दिवसीय 'कांगड़ा आविष्कार एक्स्पो - 2014' में भाग लिया। दिनांक 14 दिसम्बर, 2014 को सी एस आई आर के महानिदेशक डॉ पी. एस. आहूजा ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में आई सी एम आर के अलावा देश की विभिन्न प्रमुख संस्थाओं ने भी भाग लिया जिनमें पृथ्वीविज्ञान मंत्रालय, एन आर डी सी, जैवप्रौद्योगिकी विभाग, मत्यस्य विभाग, कोकोनट बोर्ड, आदि प्रमुख थे।

इस प्रदर्शनी में आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'जी' तथा प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के प्रमुख डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में आकर्षक पोस्टर्स के माध्यम से आई सी एम आर और इसके संस्थानों की शोध गतिविधियां और उपलब्धियां प्रदार्शित

की गईं। आई सी एम आर के हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक डॉ डी. रघुनाथराव ने "पौष्टिक आहार स्वस्थ जीवन का आधार" विषय के अंतर्गत स्वस्थ जीवन के प्रति जागरूकता का संदेश दिया।

इस अवसर पर वीडियो फिल्मों के माध्यम से भी आई सी एम आर की शोध गतिविधियां और उपलब्धियां प्रदर्शित की गईं।

दूसरे दिन कांगड़ा के कई स्कूलों से आए बड़ी संख्या में छात्र - छात्राओं ने इस प्रदर्शनी में पहुंचकर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। प्रमुख स्कूलों में रेनबो इंटरनेशनल स्कूल, नगरोटा बगवां, स्प्रिंगडेल स्कूल, जी ए वी स्कूल, कांगड़ा, आर्मी स्कूल योल; पारस स्कूल,पालमपुर; सम्मिलित थे। बड़ी संख्या में विद्यार्थीगण ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा लिया। कांगड़ा के जिलाधीश श्री सी. पालरासू ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी पधारे।

आई सी एम आर मुख्यालय में 66वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर की कुछ झलकियां

मुम्बई में संपन्न भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 102वें सत्र के दौरान 'प्राइड ऑफ इंडिया मेगा साइंस एक्स्पो' में आई सी एम आर की भागीदारी (दिनांक 3-7 जनवरी, 2015)

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 3-7 जनवरी, 2015 के दौरान मुम्बई में आयोजित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 102वें सत्र के दौरान आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। कुल 125 आकर्षक पोस्टर्स के माध्यम से आई सी एम आर मुख्यालय और इसके 20 संस्थानों द्वारा संपन्न प्रमुख शोध गतिविधियों और उनकी उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। आई सी एम आर के हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा कुपोषण, अरक्तता, प्रोटीन ऊर्जा कुपोषण, स्वास्थ्यवर्धक आहार और स्वस्थ जीवन शैली जैसी महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी प्रदान की गई। अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान द्वारा प्रदर्शित पोस्टर्स के माध्यम से सीसा, मैंगनीज़ एवं आर्सेनिक विषाक्तता, एवं बाह्य प्रदूषण, जल एवं मृदा प्रदूषण जैसे विविध पहलुओं पर जानकारी प्रदान की गई। इस संस्थान द्वारा अधिक तापमान में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए '*कूलिंग जैकेट*', सरल अर्गोनॉमिक रिक्शा और ग्रीन टोबैको सिकनेस से सुरक्षा हेतु दस्तानों को भी प्रदर्शित किया गया। इनके अलावा, आई सी एम आर के विभिन्न संस्थानों से प्राप्त पोस्टर्स के माध्यम से मलेरिया, कुष्ठरोग, क्षयरोग, कैंसर, हैज़ा एवं आंत्ररोग, HIV/AIDS के साथ-साथ क्षेत्रीय स्वास्थ्य समस्याओं पर भी जानकारी प्रदान की गई। आई सी एम आर के संस्थानों द्वारा विकसित विभिन्न स्वदेशी एवं किफ़ायती प्रौद्योगिकियों पर भी जानकारी प्रदान की गई। ट्रांस-स्लाइड्स के माध्यम से जे ई वैक्सीन, मैग्नीविज़ुअलाइज़र, बीटा-थैलासीमिया के लिए जांच किट, कालाज़ार की पहचान हेतु नॉन-इनवेसिव विधि, फेरीटिन आमापन आदि जैसी नवीन प्रौद्योगिकियों की जानकारी दी गई। प्रदर्शनी की पूर्ण अवधि के दौरान आई सी एम आर और इसके संस्थानों की शोध गतिविधियों और उपलब्धियों पर आधारित हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में निर्मित वीडियो फिल्में प्रदर्शित की गईं। दिनांक 3 जनवरी, 2015 को स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने आई सी एम आर स्टाल में पधारे माननीय केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ हर्ष वर्धन का स्वागत किया और उन्हें प्रदर्शित पोस्टर्स के माध्यम से आई सी एम आर की उपलब्धियों से अवगत कराया । सी एस आई आर के पूर्व महानिदेशक डॉ आर. मशेलकर, भारतीय विज्ञान कांग्रेस के अध्यक्ष प्रो. एस. बी निमसे जैसे गणमान्य वैज्ञानिकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में वैज्ञानिक, छात्र, शिक्षक, मीडिया कर्मी एवं स्थानीय लोग आई सी एम आर के स्टाल पर पधारे। दिनांक 7 जनवरी, 2015 को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री राम नाइक ने आईसीएमआर पैवीलियन को "अत्यन्त सूचनापरक पैवीलियन" के रूप में पुरस्कृत किया। इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु भी उपस्थित थे।

गांधीनगर में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस एवं वाइब्रैंट गुजरात के अंतर्गत मेगा साइंस एक्स्पो में आई सी एम आर की भागीदारी (दिनांक 7-13 जनवरी, 2015)

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने दिनांक 7-13 जनवरी, 2015 के दौरान गांधीनगर, गुजरात में आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस एवं वाइब्रैंट गुजरात के अंतर्गत मेगा साइंस एक्स्पो में भाग लिया। इस प्रदर्शनी में आकर्षक एवं सूचनापरक पोस्टर्स के माध्यम से आई सी एम आर एवं इसके विभिन्न संस्थानों द्वारा संपन्न शोधकार्यों और प्राप्त उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। अधिकांश जानकारी पोषण, पर्यावरणी एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य, मलेरिया, कुष्ठरोग, क्षयरोग, कैंसर, हैज़ा एवं आंत्ररोग, एचआईवी/एड्स के

साथ-साथ क्षेत्रीय स्वास्थ्य समस्याओं पर आधारित थी। इनके अलावा आई सी एम आर के संस्थानों द्वारा विकसित विभिन्न स्वदेशी एवं किफायती प्रौद्योगिकियों पर आधारित पोस्टर्स भी प्रदर्शित किए गए। आई सी एम आर की शोध गतिविधियों और उपलब्धियों पर बनी वीडियो फिल्में भी प्रदर्शित की गईं। इस अवसर पर मलेरिया परजीवी, डिंभक एवं वयस्क अवस्थाओं के रोगवाहक मच्छरों और डिंभकभक्षी मछलियों का सजीव प्रदर्शन प्रमुख आकर्षण रहा। विज्ञान कांग्रेस में पधारे बड़ी संख्या में वैज्ञानिक, शोधकर्ता, शिक्षक और आई सी एम आर स्टाल पर आए।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में संपन्न बैठकें:

मॉडेल शोध इकाई की स्थापना के लिए शासकीय मेडिकल कॉलेजों से प्राप्त प्रस्तावों की समीक्षा के लिए तकनीकी मूल्यांकन समिति की बैठक	12 दिसम्बर, 2014
मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में परियोजनाओं के लिए पुनरीक्षण समिति की बैठक	12 दिसम्बर, 2014
सी आर एस निगरानी पर बैठक	15 दिसम्बर, 2014
शॉर्ट टर्म स्टूडेण्टशिप के लिए विशेषज्ञ दल की बैठक (बी एम एस)	15-18 दिसम्बर, 2014
आई सी एम आर - एम आर सी (यू के) सहयोग के अंतर्गत प्रस्तावों की वार्षिक समीक्षा बैठक	16 दिसम्बर, 2014
कुष्ठरोग संबद्ध अशक्तता स्थितियों से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा करने हेतु बैठक (ई सी डी - I)	16 दिसम्बर, 2014
पशुजन्य रोगों के लिए परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक (ई सी डी - II)	17 दिसम्बर, 2014
"बच्चों में चिरकारी वृक्क रोग के निवारण और जन्मजात मूत्रविकृतियों में आनुवंशिक एवं आण्विक केन्द्र" नामक परियोजना हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	17 दिसम्बर, 2014
कैंसर वेबसाइट - इंडिया फाइट कैंसर की सॉफ्ट शुरुआत की बैठक	17 दिसम्बर, 2014
ऑनलाइन एक्स्ट्राम्युरल प्री-प्रपोज़ल्स के लिए जांच समिति की बैठक	18 दिसम्बर, 2014
शिशु और छोटे बच्चों की फीडिंग पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक (आर सी एच)	18 दिसम्बर, 2014
एंटीमाइक्रोबियल स्टेवार्डशिप कार्यक्रम (AMSP) पर बैठक (ई सी डी - II)	18 दिसम्बर, 2014
ट्राइबल सब प्लान की परियोजना पुनरीक्षण समिति (ई सी डी - II)	18 दिसम्बर, 2014
भूजल में उच्च आर्सेनिक मात्रा से होने वाले दुष्प्रभावों के लिए टास्क फोर्स की बैठक (एन सी डी - I)	22 दिसम्बर, 2014
पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप (PDF) 6th एवं 8th बेंच की समीक्षा हेतु बैठक	22 दिसम्बर, 2014
जीवरसायन/प्रत्यूर्जता एवं प्रतिरक्षाविज्ञान पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक (बी एम एस)	22 दिसम्बर, 2014
मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य शोध इकाई (MRHRU) के परियोजना प्रस्तावों की समीक्षा करने हेतु विशिष्ट परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	22 दिसम्बर, 2014
पी डी एफ -10th बैच के लिए चयन समिति की बैठक	22 दिसम्बर, 2014
बच्चों के लिए यौक्तिक एंटीबायोटिक नीति विकसित करने तथा एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध का मुकाबला करने हेतु राष्ट्रीय परामर्शक बैठक	23 दिसम्बर, 2014
विभिन्न प्रकार के आवर्ती उन्नत अवस्था की कैंसर स्थितियों से ग्रस्त रोगियों को मुखीय विधि से प्रयुक्त मिथाइल ग्लायोक्ज़ल उत्पाद संयोजन की सुरक्षा एवं प्रभावकारिता के मूल्यांकन हेतु प्रस्ताव पर विशेषज्ञ दल की बैठक	23 दिसम्बर, 2014

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की स्थिति की समीक्षा हेतु बैद्धिक सम्पदा अधिकार (IPR) यूनिट की बैठक	23 दिसम्बर, 2014
सुन्दर स्वास्थ्य नमक पर विशेषज्ञ दल की बैठक (आर सी एच)	26 दिसम्बर, 2014
ज़ूनोसिस पर संयुक्त कार्यकारी दल की बैठक (ई सी डी - II)	30 दिसम्बर, 2014
क्षयरोग, कुष्ठरोग और अन्य वक्ष रोगों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक (ई सी डी - I)	2 जनवरी, 2015
लसीका फाइलेरिया रोग उन्मूलन कार्यक्रम के मुक्त मूल्यांकन पर रिपोर्ट की समीक्षा हेतु बैठक	6 जनवरी, 2015
जनजातीय स्वास्थ्य फोरम की बैठक (ई सी डी - II)	7 जनवरी, 2015
HIV/ एड्स और यौन संचारित रोगों पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक (ई सी डी - II)	8 जनवरी, 2015
वरिष्ठ अवकाश प्राप्त मेडिकल/बायोमेडिकल शिक्षकों/वैज्ञानिकों हेतु आई सी एम आर चेयर्स हेतु बैठक	12 जनवरी, 2015
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की मानव संसाधन विकास योजना के अंतर्गत प्रस्तावों की समीक्षा हेतु तकनीकी मूल्यांकन समिति की बैठक	12 जनवरी, 2015
अशक्तता और पुनर्वास अनुसंधान की बैठक	12 जनवरी, 2015
मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग और जैवप्रौद्योगिकी विभाग के बीच सहमति ज्ञापन के अंतर्गत प्रस्तावित शोध के लिए वित्तीय व्यवस्था पर बैठक (आर सी एच)	12 जनवरी, 2015
एन डी आर आर एन के तकनीकी विशेषज्ञ दल की बैठक	14 जनवरी, 2015
बालकालीन न्युमोनिया पर तकनीकी सलाहकार दल की बैठक (आर सी एच)	15 एवं 16 जनवरी, 2015
फेलोशिप पर विशेषज्ञ दल की बैठक (आर सी एच)	16 जनवरी, 2015
एन डी आर आर एन के तकनीकी विशेषज्ञ दल की बैठक	16 जनवरी, 2015
राष्ट्रीय पर्यावरणी स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान के विशेषज्ञ दल की बैठक (एन सी डी - II)	16 जनवरी, 2015
एकेडमिक परीक्षण में आघात अथवा मृत्यु की स्थिति में मुवावजे के भुगतान पर बैठक	16 जनवरी, 2015
कीटोस्टेरिल के प्रयोग पर विशेषज्ञ समिति की बैठक	16 जनवरी, 2015
एन डी आर आर एन के तकनीकी विशेषज्ञ दल की बैठक	19 जनवरी, 2015

तकनीकी सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87